राधास्वामी सहाय।

भूमिका

इस पुस्तक में वे सब शब्द छांट कर एकत्र किये गये हैं जिनका सत्संगियों को बार बार पाठ करना होता है। शब्दों का अर्थ समझने में मदद देने के लिये जहां तहां मुश्किल लफ़्ज़ों के मानी भी दर्ज कर दिये गये हैं। उम्मीद है कि इस पुस्तक से सत्संगियों को बहुत कुछ सहायता मिलेगी।

शब्दों का पाठ करते वक़्त सुरत की बैठक के मुक़ाम पर हुज़ूरी चरनों का ध्यान करना चाहिए और जब किसी शब्द में अन्तरी मुक़ामात का ज़िक्र आवे तो उस वक़्त उस स्थान से मुताबिक़त रखनेवाले अन्तरी चक्र पर ध्यान करना चाहिए। पाठ करते वक़्त यह महसूस करना मुनासिब है कि हुज़ूर राधास्वामी दयाल हमारे संमुख बिराज रहे हैं और हम अपने मन के भाव उनके चरनों में पेश कर रहे हैं। पाठ करने में अपनी आवाज़ ज़्यादा बुलन्द नहीं करनी

चाहिए और न ही यह ख़्याल करना चाहिए कि हम अपना पाठ दूसरे लोगों को सुना रहे हैं। अगर इन सादे उसूलों की पूरे तौर से पाबन्दी की जावेगी तो ज़रूर शब्दों के पाठ से गहरी सफ़ाई व निर्मलता प्राप्त हो कर सुरत का घाट बदल जावेगा और वृत्ति अन्तर्मुख होकर हुज़ूरी चरनों का निर्मल रस हासिल करेगी।

यह पुस्तक सिर्फ़ सत्संगियों के इस्तैमाल के लिये है इसलिए इसको संभाल कर अपने पास रखना चाहिये।

स्वामी-सेवक-सम्वाद में मोटे दृष्टान्त देकर सन्तमत के नाज़ुक उसूल बयान किये गये हैं। चूंकि उनके समझ लेने से हर सत्संगी को अपनी प्रीति प्रतीति दृढ़ करने में भारी मदद मिलेगी इसलिए मुनासिब है कि कोशिश करके उन का मतलब ज़हननशीन कर लिया जावे।

आनन्द स्वरूप

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय।

मुक्तावली

दोहे (१)

राधास्वामी नाम जो गावे[1] सोई तरे[2]।
कल कलेश[3] सब नाश सुख पावे सब दुख हरे[4] ॥१॥
ऐसा नाम अपार कोई भेद न जानई।
जो जाने सो पार बहुर[5] न जग में जन्मई ॥२॥
राधास्वामी गाय कर जनम सुफल करले।
यही नाम निज[6] नाम है मन अपने धरले ॥३॥
बैठक[7] स्वामी[8] अद्भुती[9] राधा[10] निरखनिहार[11]।
और न कोई लख[12] सके शोभा अगम अपार ॥४॥

---

१ प्रेम सहित उच्चारण करे। २ भवसागर से पार होजावे। ३ काल के क्लेश। ४ दूर हों। ५ फिर। ६ असली। ७ बैठने का स्थान यानी राधास्वामीधाम। ८ कुलमालिक। ९ अनोखी। १० आदि सुरत। ११ देखने वाली है। १२ देख सकता है।

गुप्त रूप जहँ धारिया राधास्वामी नाम ।
विना मेहर नहिं पावई जहाँ कोई विसराम ॥५॥

मंगलाचरण

करूँ बंदगी राधास्वामी आगे ।
जिन परताप जीव यहु जागे[१] ॥१॥

बारम्बार करूँ परनाम ।
सतगुरु [२]पदम धाम सतनाम ॥२॥

आदि अनादि जुगादि अनाम ।
सन्त स्वरूप छोड़ निज धाम ॥३॥

आये भवजल[३] नाव लगाई ।
हम से जीवन लिया चढ़ाई ॥४॥

शब्द दृढ़ाया सुरत बताई ।
करम भरम से लिया बचाई ॥५॥

१ चेते । २ सेतकँवल के बासी । ३ भवसागर ।

॥ दोहा ॥

कोटि कोटि करूँ बन्दना अरब खरब दंडौत ।
राधास्वामी मिल गये खुला भक्ति का सोत[1] ॥६॥

॥ चौपाई ॥

भक्ति सुनाई सब से न्यारी ।
वेद कतेब[2] न ताहि बिचारी ॥७॥
सत्तपुरुष [3]चौथे पद बासा ।
सन्तन का वहाँ सदा बिलासा ॥८॥
सो घर दरसाया गुरु पूरे ।
वीन बजे जहँ अचरज तूरे[4] ॥९॥
आगे अलखपुरुष दरबारा ।
देखा जाय सुरत से सारा[5] ॥१०॥
तिस पर अगम लोक इक न्यारा ।
सन्त सुरत कोइ करत बिहारा ॥११॥

---

१ भंडार । २ मजहबी किताबें । ३ सत्यलोक । ४ शब्द । ५ सार ।

तहाँ से दरसे अटल[1] अटारी[2] ।
अद्भुत राधास्वामी महल सँवारी ॥१२॥
सुरत हुई अति कर मगनानी ।
पुरुष अनामी जाय समानी ॥१३॥

मंगलाचरण (२)

परम पुरुष पूरन धनी
राधास्वामी नाम ।
तिन के चरन पदम[3] पर
कोटि कोटि परनाम ॥ १ ॥
जग जीवन को अति दुखी
देख दया उमँगाय ।
सन्त रूप अवतार धर
जग में प्रगटे आय ॥ २ ॥

---

१ अविनाशी । २ सबसे ऊपर का मकान । ३ कमल ।

कुल मालिक दातार[1]
कृपासिन्धु गुरुरूप धर।
सुरत शब्द मत गाय
भेद दिया निज अधर[2] घर॥ ३॥

बड़ भागी वे जीव
चरनसरन जिन दृढ़ करी।
कर्म भर्म को छोड़
प्रीत प्रतीत हिरदे धरी॥ ४॥

उमँग सहित गुरु सेव
सतसँग कर तिरपत[3] भये।
तन मन भेंट चढ़ाय
प्रेमदान गुरु से लये॥ ५॥

गुरु मूरत हिरदे बसी
देखैं नित्त बिलास।

---

१ दाता। २ ऊपरी, आसमानी। ३ शान्त, सन्तुष्ट।

जगत बासना जार[1] कर

पावैं चरन निवास ॥ ६ ॥

प्रेम सहित नित गावईं

राधास्वामी नाम ।

सुरत डोर चरनन लगी

बिसर गये सब काम ॥ ७ ॥

गुरु आरत कर मगन होय

छिन छिन प्रीत बढ़ाय ।

मन को मोड़ा[2] जगत से

सूरत शब्द लगाय ॥ ८ ॥

राधास्वामी दयाल दया करी

सब को लिया अपनाय ।

शब्द जहाज़ चढ़ाय कर

दीना पार लगाय ॥ ९ ॥

१ जला कर । २ हटाया ।

भौजल गहिर गँभीर है
खेवट[1] सतगुरु पूर ।
राधास्वामी चरनन ध्यान धर
पहुँचे निज घर सूर[2] ॥१०॥
बार बार बिनती करूँ
बँदगी करूँ अनन्त ।
छिन छिन जाऊँ बलिहारियाँ
राधास्वामी पूरे सन्त ॥११॥

बिनती (३)

करूँ बेनती दोऊ कर[3] जोरी ।
अर्ज़ सुनो राधास्वामी मोरी[4] ॥ १ ॥
सत्तपुरुष तुम सतगुरु दाता ।
सब जीवन के पितु और माता ॥ २ ॥

---

१ नाव चलाने वाला । २ सूरमा । ३ हाथ । ४ मेरी ।

दया धार अपना कर लीजे ।
काल जाल से न्यारा कीजे ॥ ३ ॥
सतयुग त्रेता द्वापर बीता ।
काहू न जानी शब्द[1] की रीता[2] ॥ ४ ॥
कलजुग में स्वामी दया विचारी ।
परघट कर के शब्द पुकारी ॥ ५ ॥
जीव काज स्वामी जग में आये ।
भवसागर से पार लगाये ॥ ६ ॥
तीन[3] छोड़ [4]चौथा पद दीन्हा ।
सत्तनाम सतगुरु गत चीन्हा ॥ ७ ॥
जग मग जोति होत उजियारा ।
गगन सोत पर चन्द्र निहारा ॥ ८ ॥
सेत सिंहासन छत्र विराजे ।
अनहद शब्द गैब[5] धुन गाजै ॥ ९ ॥

१ निजशब्द । २ रीति । ३ तीन लोक । ४ सत्यलोक । ५ गुप्त ।

त्तर[1] अत्तर[2] निहअत्तर[3] पारा।
विनती करे जहँ दास तुम्हारा ॥१०॥
लोक अलोक[4] पाउँ सुखधामा।
चरन सरन दीजे बिसरामा ॥११॥

बिनती (४)

वार वार करूँ बेनती राधास्वामी आगे।
दया करो दाता मेरे चित चरनन लागे ॥ १ ॥
जनम जनम रही भूल में नहिं पाया भेदा।
काल करम के जाल में रहि भोगत खेदा ॥ २ ॥
जगत जीव भरमत फिरें नित चारों खानी[5]।
ज्ञानी जोगी पिल रहे सब मन की घानी[6] ॥ ३ ॥
भाग जगा मेरा आदि का मिले सतगुरु आई।
राधास्वामी धाम का मोहिं भेद जनाई ॥ ४ ॥

---

१ त्रिकुटी। २ सुन्न। ३ भँवरगुफा। ४ अलोक्य या लामुक़ाम।
५ चार खानि की योनियों में। ६ कोल्हू।

ऊँच से ऊँचा देश है वह अधर ठिकानी ।
बिना सन्त पावे नहीं सुत शब्द निशानी ॥ ५ ॥
राधास्वामी नाम की मोहिं महिमा सुनाई ।
बिरह अनुराग जगाय[1] के घर पहुँचूँ भाई ॥ ६ ॥
साधसंग[2] कर सार रस मैंने पिया अघाई ।
प्रेम लगा गुरुचरन में मन शान्त न आई ॥ ७ ॥
तड़प उठे बेकल रहूँ कस पिया घर जाई ।
दरशन रस नित नित लहूँ गहे मन थिरताई ॥ ८ ॥
सुरत चढ़े आकाश में करे शब्द बिलासा ।
धाम धाम निरखत चले पावे निज घर बासा ॥९॥
यह आसा मेरे मन बसे रहे चित्त उदासा ।
बिनय सुनो किरपा करो दीजे चरन निवासा ॥१०॥
तुम बिन कोइ समरथ नहीं जासे माँगूँ दाना ।
प्रेम धार बरषा करो खोलो अम्मृतखाना[3] ॥११॥

१ पैदा करके। २ सतसंग। ३ खानि।

दीनदयाल दया करो मेरे समरथ स्वामी ।
शुकर[1] करूँ गावत रहूँ नित राधास्वामी ॥१२॥

बिनती (५)

॥ दोहा ॥

वार वार कर जोर कर,
सविनय करूँ पुकार ।
साधसंग[2] मोहिं देव नित,
परम गुरू दातार ॥ १ ॥

कृपा सिन्धु समरथ पुरुष,
आदि[3] अनादि अपार ।
राधास्वामी परम पितु,
मैं तुम सदा अधार ॥ २ ॥

॥ सोरठा ॥

वार वार वलि जाउँ,
तन मन वारूँ[4] चरन पर ।

---

१ शुकराना । २ सतसंग । ३ सबके आदि । ४ निछावर करूँ ।

क्या मुख ले मैं गाऊँ,

मेहर करी जस कृपा कर ॥ ३ ॥

धन्य धन्य गुरु देव,

दयासिन्धु पूरन धनी।

नित्त करूँ तुम सेव,

अचल भक्ति मोहिं देव प्रभु ॥ ४ ॥

दीन अधीन अनाथ,

हाथ गहा[1] तुम [2]आन कर।

अब राखो नित साथ,

दीन दयाल कृपानिधि ॥ ५ ॥

काम क्रोध मद लोभ,

सब विधि अवगुनहार मैं।

प्रभु राखो मेरी लाज,

तुम द्वारे अब मैं पड़ा ॥ ६ ॥

---

१ पकड़ा। २ आकर।

राधास्वामी गुरु समरत्थ,
तुम बिन और न दूसरा ।
अब करो दया परतच्छ[1],
तुम दर एती बिलँब[2] क्यों ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

दया करो मेरे साइयाँ,
देव प्रेम की दात ।
दुख सुख कछु ब्यापै नहीं,
छूटै सब उत्पात[3] ॥ ८ ॥

शब्द (९)

दर्शन कैसे पाऊँ घट[4] में,
यह तो बात कठिन अति भारी । टेक ।
सतसँग करूँ नेम से निस दिन,
गाऊँ महिमा चरनन छिन छिन,

१ प्रकट । २ देर । ३ झगड़ा, कष्ट । ४ अन्तर में ।

सुमिरन ध्यान भजन भी पुन पुन,
कर कर सभी जतन[१] मैं हारी ॥ १ ॥
मन से जूझूँ[२] अपने वल भर,
दाता दया मेहर निज हिये धर,
जग से भागूँ नित ही डर कर,
पर कुछ चले न पेश[३] हमारी ॥ २ ॥
दीन दुखी होय नित्त पुकारूँ,
तन मन धन सब चरनन वारूँ,
भक्तन सेवा सद ही धारूँ,
तो भी पुजें[४] न आस हमारी ॥ ३ ॥
अब क्या करूँ तुम्हीं बतलाओ,
करूँ जतन क्या वोह सिखलाओ,
मिलो कौन विधि सो जतलाओ[५],
मेटो तपन हमारी सारी ॥ ४ ॥

१ उपाय।-२-लड़ूँ।३-वस।४-पूरी होती है।५ समझाओ।

जब जब दया से सतसँग दीना,
दुख सब पल छिन में हर लीना,
जान पड़ी अस किरपा कीना,
बन गई अब सब बात हमारी ॥ ५ ॥
मूँदत[1] नैन अँधेरा वोही[2],
मानो तिमिरखंड[3] है घट ही,
नेकहु झलक रूप का नाहीं,
सूझत नहिं वह मूरति[4] प्यारी ॥ ६ ॥
सुनिये कन्त सुजान हमारे,
या बिधि मम जीवन बिरथा[5] रे,
घट में जब लग दरश न पा रे,
नैया लगे न घाट हमारी ॥ ७ ॥
जग से डरूँ सदा मैं प्यारे,

१ बन्द करते ही। २ वही जैसा पहले था। ३ अँधेरे का देश। ४ शक्ल। ५ बृथा, निष्फल।

राखो चरनन मांहिं सदा रे,
बिनती करूँ पुकार पुकारे,
घट में दरशन दीजे [1]आ री ॥ ८ ॥

अन्तर दया बिचारो ऐसी,
मिटे तपन[2] घट जैसी तैसी,
टिके[3] सुरत निज चरनन वैसी,
जैसे सुत[4] माता लिपटा री ॥ ६ ॥

राधास्वामी चरनन बासा,
अकह अगम[5] सत[6] अलख निवासा,
पाई मैं होय दासन दासा,
बन गई सचमुच बात हमारी ॥ १० ॥

शब्द (७)

दर्शन दीजे दीनदयाला,
दाता दासन के हितकारी । टेक ।

---

१ आकर । २ बिरह बेकली । ३ ठहरे । ४ पुत्र ।
५ गम्य से बाहर । ६ सत्य ।

जब से चरन सरन मैं लीनी,
मन बुधि सुरत हुए लवलीनी।
तुम्हरी किरपा घट में चीनी,
होगई जीवनि[१] सुफल हमारी॥ १॥
मैं हूँ बाल अनाड़ी[२] प्यारे,
तुम हो दाता अपर अपारे।
राखो चरनन मोहिं सदा रे,
मेरी निस दिन यही पुकारी॥ २॥
यह जग विष[३] की खान अपारा,
बहती प्रबल अनल[४] की धारा।
तुम मोहिं लीनी[५] अधम उबारा,
गाऊँ कैसे महिमा भारी॥ ३॥
[६]बिछड़ूँ नहीं चरन से कबही,
जनम जनम मेरी बिनती एही।

१ जीवनी यानी जिन्दगी। २ अनजान। ३ जहर। ४ आग।
५ लिया। ६ अलग न होऊँ।

तन विच दर्शन पाऊँ नितही,

सुनिये अर्ज़ ग़रीब भिखारी[1] ॥ ४ ॥

राधास्वामी प्रान पियारे,

हम सब दासन के आधारे।

सब जग (हम को) सहजहि लीनी तारे[2],

अचरज अचरज अचरज भारी ॥ ५ ॥

(लीला अचरज अगम अपारी)

सेवक-सम्वाद (८)

प्रश्न

सेवक करे पुकार,

धार चित दृढ़ विश्वासा ॥

सतगुरु होयँ दयाल,

दान दें चरन निवासा ॥ १ ॥

---

१ मँगता की। २ पार कर दिया।

आयू[1] बीती जाय,
दिनो दिन काया छीजे[2]।
बल पौरुष रहे हार,
जतन कोइ नेक[3] न सूझे॥ २॥
सुनिये दीनदयाल,
मेहर कर विनती मेरी।
मान लेव दया धार,
नहीं अब लाओ देरी॥ ३॥
पुत्र पिता से छूट,
सहे दुख बहु[4] या जग में।
बिन माता मर जाय,
बिलप कर सुत[5] कब लग में॥ ४॥
पति का होय वियोग,
पत्नी[6] सिर होय रँडेपा[7]।

१ उम्र। २ छीन होती जाती है। ३ जरा भी। ४ बहुत। ५ कभी का यानी थोड़ी ही देर में। ६ स्त्री। ७ विधवापन।

छूटे कस जंजाल,
जरे नित याहि अँदेसा[1] ॥ ५ ॥
प्रीतम रहें बिदेश,
प्रेमी का निस दिन मरना ।
मछली जल का जीव,
बिना जल कैसे जीना ॥ ६ ॥
स्वामी मुख लें मोड़[2],
और फिर फेरें नाहीं ।
सेवक [3]झुर झुर मरे,
जीवना नाहिं सुहाई ॥ ७ ॥
प्रेमी सेवक बाल,
सबन का ऐसा लेखा[4] ।
प्रीति जहाँ जिस लगी,
छुटे पर मरते देखा ॥ ८ ॥

१ फ़िक्र । २ फेर । ३ पछता पछता कर । ४ हिसाब, हाल ।

मैं हूँ बाल तुम्हार,
और सेवक भी साँचा ।
हो स्वामी सिरताज,
मेरे तुम पितु और माता ॥ ९ ॥
प्रेमी भी तुम्हार,
सदा मैं चरनन राता[1] ।
तुम प्रीतम दिलदार,
सरल चित सुन्दर गाता[2] ॥१०॥
अब तुम ही करो नियाव[3],
नहीं धृग ऐसा जीना ।
तिहरा दुख जब पड़े,
बिना तुम निस दिन सहना ॥११॥
ऐसी दशा निहार,
तरस तुम नेक न आवत ।

१ रत यानी लवलीन । २ शरीर, स्वरूप । ३ इन्साफ ।

दीन दुखी की माँग,
ध्यान[1] तुम नाहिं समावत[2] ॥१२॥
दूना दुख हो जाय,
उठें जब ऐसी शंका ।
ऊपर जलती आग,
झले[3] कोइ जैसे पंखा ॥१३॥
तुम्हरे क्या यही रीति,
तरस कबहूँ नहिं करना ।
ज़ख्मी[4] कोइ हो जाय,
लोन[5] ऊपर से धरना ॥१४॥
सुनिये आज पुकार,
दया धर प्यारे सतगुर ।
लहू[6] अपना नित पिऊँ,
सहूँ मैं सब की [7]दुर दुर ॥१५॥

१ ख्याल में । २ समाती, आती । ३ झोले, हिलावे । ४ घायल । ५ नमक । ६ खून । ७ दुरदुराना, निरादर ।

परम गुरू दातार,
मेरे तुम राधास्वामी ।
चरनन लेउ लिपटाय,
करो सब दुख की हानी[1] ॥१६॥

उत्तर

सतगुरु परम दयाल,
कही यह अम्मृत बानी ।
सुनलो बचन हमार,
कहूँ मैं तोहिं बुझानी[2] ॥ १ ॥
यह है तन का देश,
बिना तन जीना नाहीं ।
जो शक्ती यहाँ बसे,
रहे परदे के माहीं ॥ २ ॥

---

१ नाश । २ समझाकर ।

मनुवाँ बड़ बलवान,
उसी की यहाँ ठकुराई[1]।
[2]करन कारन सब काज,
यहाँ पर मन ही रहाई ॥ ३ ॥
सूरत रहे नियार[3],
नहीं उलझेरें[4] पड़ती।
मन को देती जान,
और कुछ काज न करती ॥ ४ ॥
पाकर सुत से जान,
करे मन अपनी किरिया[5]।
तन को देवे जान,
उसी में बँध पुन रहिया ॥ ५ ॥
जग का यही व्योहार,
कहा मैं तोहिं सुनाई।

१ राज्य। २ करने कराने वाला। ३ अलग। ४ उलझन में, बखेड़े में। ५ काम।

प्रेमी सेवक बाल,
यहाँ पर मन ही रहाई[1] ॥ ६ ॥
प्रीतम स्वामी पिता,
यही मन नाम धराने ।
तन या मन की प्रीति,
रहें जीव सदा भुलाने ॥ ७ ॥
तन के भीतर लहू,
[2]लहू बस प्रीति जो होती ।
महिमा वाकी अधिक,
जगत में निस दिन रहती ॥ ८ ॥
इनसे बढ़ चढ़ प्रीति,
रहे एक और अलगानी ।
पिछला कोइ संजोग,
कहें कारन जिस ज्ञानी ॥ ९ ॥

१ रहता है। २ खून के रिश्ते की प्रीति ।

यही सब जग की प्रीति,
परे इस क्या कुछ लेखा ।
बिन तन मन से होय न्यार[1],
कहो कस जाय वह पेखा[2] ॥१०॥
सुत की सुत सँग प्रीति,
कहो कोइ कैसे गावे ।
रसना[3] रहे तुतलाय,
बरन[4] में कैसे लावे ॥११॥
गन्दा तन मन लहू,
और गन्दी इन रीती ।
निर्मल चेतन सुरत,
और निर्मल इस प्रीती ॥१२॥
शील संतोष और बिरह,
मिलें सँग प्रेम और ज्ञाना ।

१ अलग । २ देखा । ३ जीभ । ४ वर्णन ।

इन सब का ही खेल,
सुरत रहे सदा खिलाना[1] ॥१३॥
सुरत अंश की प्रीति,
समझ काहू नहिं आवे ।
फिर अंशी की प्रीति,
भला कैसे लख पावे ॥१४॥
सुरत प्रेम की बुन्द,
अकथ इसका ब्योहारा ।
अंशी प्रेम भँडार,
प्रीति उस अगम अपारा ॥१५॥
काल करम का देन[2],
रहे तुम सिर अधिकानी[3] ।
जेहि बिधि होय वह दूर,
रीति हम वैसी ठानी[4] ॥१६॥

१ खेलती। २ क़र्ज़। ३ अधिक, ज्यादा। ४ निश्चय की।

कहो इसे ना न्याव,[1]
दया निज करो विचारी ।
तुम्हरा सिर ले बोझ,
देह यहँ आ हम धारी ॥१७॥
ग़ाफ़िल[2] थे तुम पड़े,
हुए जस बाल अजाना ।
हम ही[3] हेला मार मार,
तुम्हें सुधि में लाना ॥१८॥
घर का दिया सँदेस,
और चलने की जुक्ती ।
प्रीति हिये उमँगाय,
कराई सच्ची भक्ती ॥१९॥
जब लग चुके न देन,
सहो दुख रह इस जंगल ।

१ इन्साफ़ । २ बेहोश । ३ हिला हिला कर ।

जिस दिन चूका[1] देन,

करो फिर आनँद मंगल ॥२०॥

तुमहीं करो विचार,

तरस[2] क्या हमरे नाहीं ।

राधास्वामी मेहर विचार,

रहो चरनन की छाहीं[3] ॥२१॥

प्रश्न

सुन कर अम्मृत वचन,

अधिक सेवक हरषाया ।

तपन हुई घट[4] दूर,

हिये विच प्रेम भराया ॥ १ ॥

चरनन सीस नवाय,

अरज़ यह कीन सँभारे ।

---

१ खत्म हुआ । २ रहम, दया । ३ छाया में । ४ अन्तर की ।

हे स्वामी सिरताज,

मेहर के निज भंडारे ॥ २ ॥

समझ पड़ी कुछ आज,

मौज जस तुमने कीन्ही ।

तुम्हरी मेहर अपार,

दयानिधि कुछ हम चीन्ही ॥ ३ ॥

तुम बिन को अस होय,

मेहर अस जो चित लाता ।

सब जीवन के हाले ज़ार[1] पर,

तरस जो खाता ॥ ४ ॥

जान पड़ी अब मोहिं,

दशा जो हम सिर आई ।

वह सब मौज तुम्हार,

मेहर बस तुमने रचाई ॥ ५ ॥

१ रहम के क़ाबिल ।

पर यह देश उजाड़,
जहाँ मोहिं बासा दीना ।
अरु मन काला नाग[1],
संग जो मेरे कीना ॥ ६ ॥
देख देख दिन रात,
रहूँ अति हिय घबरानी ।
डरप डरप जिय जाय,
अजा[2] जस सिंह दिखानी[3] ॥ ७ ॥
यह तन दुख की खान,
मोहिं इक छिन नहिं भावे ।
बैरी मन का संग,
तनिक नहिं मोहिं सुहावे ॥ ८ ॥
सुमिरन ध्यान और भजन,
जुक्ति निज घर चलने की ।

१ साँप । २ बकरी । ३ दिखाने से ।

निज किरपा हिये धार,
दयानिधि तुमने बख्शी[1] ॥ ६ ॥
करन चहूँ दिन रात,
उमँग अँग सँग में लेकर ।
पर यह बाधा[2] होयँ,
पटकते धक्के देकर ॥१०॥
कभी खुजली होजाय,
कभी पटकन[3] होय तन में ।
कभी आलस सिर आय,
गुनावन उठते मन में ॥११॥
जग के भोग विलास,
चहे मन दिन और राती ।
इनकी लहर उठाय,
करे मन बहु उत्पाती[4] ॥१२॥

१ दी । २ विघ्न, अटकाव । ३ दर्द । ४ बखेड़ा, उपद्रव ।

झुरत रहूँ बेहाल
पेश[1] कुछ नेक न जावे ।
तुम्हरा सुन्दर रूप
नैन में नाहिं ठैरावे[2] ॥१३॥
कौन मौज तुम धार
दिये मोहिं ऐसे साथी ।
मन सा[3] बैरी दुष्ट
बसाया मेरी छाती ॥१४॥
तुम्हरा यह सब खेल
समझ मेरी नहिं आवे ।
समरथ पुरुष दयाल
मेहर अस क्यों न करावे ॥१५॥
सँग इनका छुट जाय
सुरत रहे चरनन अटकी[4] ।

---

१ कुछ भी बस नहीं चलता । २ ठहरता है । ३ मन ऐसा । ४ लीन ।

यह तन होवे नाश

भरम की फूटे मटकी[1] ॥१६॥

सतगुरु दीन दयाल

मेहर अब ऐसी धारो ।

तन मन होकर नाश

सुरत का होय उबारो ॥१७॥

उत्तर

सुन सेवक का हाल

दयानिधि वचन सुनाया ।

दयाधार बरसाय

दर्द दुख दूर वहाया ॥ १ ॥

मानुष जन्म अमोल

भेद कोइ वाहि न जाने ।

---

१ मिट्टी का घड़ा ।

बिन जांने यहि भेद
क़दर कैसे मन आने ॥ २ ॥
जस तेली अनजान
भेद पारस[1] नहिं जाना ।
पड़ी पारसी[1] पास
रहा नित तेल तुलाना ॥ ३ ॥
अस बिन समझे भेद
क़दर तुम तन नहिं कीनी ।
हाड़ मास अटकाय
ख़बर अन्तर नहिं लीनी ॥ ४ ॥
अंशी निज भंडार
सर्व रचना जस साजी ।
ऐसे बित[2] अनुसार
सुरत तनरचना राची[3] ॥ ५ ॥

१ पारस पत्थर । २ वित्त, हैसियत । ३ रची है ।

सन्तन कहा सुनाय
भेद रचना का ऐसा ।
पिंड ब्रह्मँड और परे
कहा सन्तन का देसा ॥ ६ ॥
'इनके छै छै भाग
खोलकर सन्त बखाने ।
चक्र कमल और पदम
उन्हीं के नाम कहाने ॥ ७ ॥
मानुष चोले[२] माहिं
रहे इन सब की छाया ।
मंडल से होय मेल
द्वार जो जाय खुलाया ॥ ८ ॥
ज्यों ज्यों जागे भाग
खुलें सब गुप्त दुवारे ।

---

१ इन तीनों के छः छः हिस्से । २ मनुष्यशरीर ।

सहज जीव निरवार[1]
मेल हो निज भंडारे ॥ ९ ॥
बिन इस तन के और
कहीं यह औसर नाहीं ।
कोटि जन्म भटकाय
तभी यह हाथ लगाई ॥१०॥
भक्ति बीज अनमोल
सन्त जो आकर डारे ।
बिन या तन घट भूमि[2]
कहीं नहिं अंकुर[3] लावे ॥११॥
घर चलने की जुक्ति
सन्त जो आय बताई ।
बिन या तन के वास
कभी ना जाय कमाई ॥१२॥

१ छुटकारा। २ जमीन। ३ कुला।

तातें[1] होय हुशियार[2]
क़दर इस तन की जानो ।
ऐसे तन के स्वाँस
स्वाँस की क़ीमत मानो ॥१३॥
मन जो तुमको मिला
कहूँ इस भेद सुनाई ।
सुत और तन के बीच
रहा यह मेल कराई ॥१४॥
आदि कर्म का भार
रहा जो तुम्हरे सिर पर ।
वाकी जब तब धार
गिरे इस मन के ऊपर ॥१५॥
कहो मन को तुम द्वार
चहे समझो इक नाली ।

१ इस लिए। २ सचेत।

आदि कर्म की मैल
जहाँ से वह होय ख़ाली ॥१६॥
विन पाये मन संग
नहीं हो तन में वासा ।
विन इनके संजोग
कर्म नहिं होवें नासा ॥१७॥
विन हूए[1] कर्म नाश
नहीं हो घर को चलना ।
जम की हाट[2] विकाय
पड़े दुख निस दिन सहना ॥१८॥
राधास्वामी कहा सुनाय
खोल अब सारा भेदा ।
चरनन में लौ लाय
हरो[3] तन मन के खेदा[4] ॥१९॥

---

१ हुए । २ बाज़ार, संसार । ३ दूर करो । ४ दुख ।

प्रश्न

तन मन का सुन भेद
हुआ सेवक अति परसन[1] ।
सुधि बुधि गई बिसराय
गिरा सतगुरु के चरनन ॥ १ ॥
मेहर दया के सिन्धु
दया की लहर उमाई[2] ।
दोनों भुजा पसार
लिया सेवक गल लाई ॥ २ ॥
जब कुछ बीते काल
[3]खुली सेवक की आँखी ।
[4]गल बिच गलफ़ी डाल
अरज़ यों मुख से भाखी ॥ ३ ॥
जो कुछ भेद अमोल
कहा तुम प्यारे सतगुरु ।

---

१ प्रसन्न । २ उमँगाई । ३ चेत हुआ । ४ गले में कपड़ा डाल कर, जो दीनता की निशानी है ।

प्रिय लागा अति मोहिं
बसा वह मेरे निज उर[1] ॥ ४ ॥

दूर हुए दुख साल
फ़िकर बहु हो गये नाशा ।
मन बिच आई शान्ति
बँधी चित चरनन आशा ॥ ५ ॥

तुम्हरी आज्ञा[2] पाय
करूँ परशन[3] इक झीना[4] ।
दया धार[5] समझाव[6]
पड़े कब लग मोहिं जीना ॥ ६ ॥

कर्म बोझ सिर मोर
पड़ा बेहद है स्वामी ।
जब लग वह नहिं नाश
सुरत रहे तन बिच तानी[7] ॥ ७ ॥

१ हृदय । २ हुक्म । ३ प्रश्न, सवाल । ४ बारीक । ५ करके । ६ समझाओ । ७ तनी हुई ।

याते होय अनुमान[1]
जुगन जुग मोको रहना ।
या मंडल में पड़े
रूप मर मर के धरना ॥ ८ ॥

मन की नाली खबर
नहीं सूखे [2]कब ताईं ।
ऐसा दिन कब आय
चलन हो निज घर राहीं[3] ॥९॥

निज घर है अति दूर
राह भी बहु रपटीली[4] ।
पहुँचन कब कस होय
चाल जब ऐसी ढीली ॥१०॥

स्वामी दीनदयाल
जाऊँ मैं बलि बलि तुम्हरे ।

१ ख्याल । २ कब तक । ३ रास्ता, मार्ग । ४ जिस पर पैर न ठहरे ।

देओ उत्तर दया धार
प्रश्न इसका भी हमरे ॥११॥

उत्तर

स्वामी मेहर विचार
बचन धीरज अस बोले ।
सुनहु भेद अब सार
कहत हूँ तुम से खोले[1] ॥१॥
करम भार का भेद
रहे सचमुच ही ऐसा ।
कोटि जन्म लग जायँ
चुकन को इसका लेखा ॥२॥
आदि करम जंजाल
लगा है जैसा कठिना ।

---

१ प्रकट ।

छूटन किस दिन होय
समझ में को ला सकना ॥ ३ ॥
निज घर जेती दूर
बिकट[1] जस रस्ता कहियन[2] ।
पहुँचन होय न होय
समझ में नाहिं समैयन[3] ॥ ४ ॥
एक वार इक पेड़
खड़ा कहिं सीधा ऊँचा ।
शिखरी[4] पर फल लगा
जिसे[5] जहँ कोइ न पहुँचा ॥ ५ ॥
और कोई इक कीट[6]
घूमता पृथिवी ऊपर ।
पहुँचा वहँ पर आय
वृत्त फल महिमा सुनकर ॥ ६ ॥

---

१ कठिन । २ कहा जाता है । ३ समाता । ४ चोटी । ५ जिसके । ६ कीड़ा ।

कौन जतन वह करे
पुरे कस मन की आसा।
भूमी[1] ऊपर पड़ा
कीट नित सहे तरासा[2] ॥ ७ ॥
एक जतन यह होय
चढ़े वह तरवर[3] ऊपर।
या फल नीचे आय
पड़े तरवर से गिरकर ॥ ८ ॥
दोनों जतन असाध[4]
कीट की पेश न जावे।
चढ़ने का बल नाहिं
नहीं मन धीरज लावे ॥ ९ ॥
कोटि बरस दरकार
पहुँच को फल के नेड़े[5]।

१ जमीन। २ सन्ताप। ३ पेड़। ४ असाध्य, कठिन। ५ निकट।

और देखे फल बाट[1]
पड़े जनमन को ठैरे[2] ॥१०॥
बहुत देर तक सोच
कीट मन यही समाया ।
जो कुछ होय सो होय
चढ़ो ऊपर बल लाया[3] ॥११॥
चिकना था वह पेड़
खड़ा इक दम था सीधा ।
बल पौरुष सब लाय
कीट कुछ ऊपर पहुँचा ॥१२॥
हार गई जब देह
लगा धड़[4] थर थर कँपने ।
ठहरन से लाचार
लगा अब नीचे गिरने ॥१३॥

---

१ रास्ता, फल गिरने का इन्तिज़ार । २ ठहरना । ३ लगाकर । ४ शरीर ।

पग[1] जो रपटा खाय
गिरा वह औंधा[2] नीचे ।
बेबस रहा सिसकाय
कहे दुख अपना किससे ॥१४॥
इसी हाल के माहिं
वहाँ पच्ची इक आया ।
देख कीट बेहाल
तरस मन ताहि समाया ॥१५॥
निकट कीट के आन
कहा पच्ची ने ऐसे ।
क्या रे कीट अजान
पड़े बेदम[3] हो कैसे ॥१६॥
सुनकर मीठा बोल
कीट ने[4] लिया संभाला ।

१ पैर। २ मुँह के बल। ३ बेहोश। ४ सावधान हुआ।

दुख अपने का हाल
सभी फिर रो कह डाला ॥१७॥
पत्ती दया विचार
कहा तुम बैठो सीधे ।
पग हमरा लो थाम[1]
ज़ोर कर दोनों कर[2] से ॥१८॥
लेकर तुमको उड़ूँ
[3]पलक में पहुँचें ऊपर ।
फल का करो अहार[4]
सहज में मुझपर चढ़कर ॥१९॥
बोला कीट पुकार
धन्य हो मीत सुमीता ।
पर बल कर में नाहिं
[5]गहन का नाहिं सुभीता[6] ॥२०॥

१ पकड़ । २ हाथ । ३ छिन में । ४ भोजन । ५ पकड़ने का ।
६ सावकाश, सहूलियत ।

ना जानूँ छुट जाय
चरन कहिं मग[1] के माहीं ।
क्या गति[2] मेरी होय
गिरूँ जो सिर के दाईं ॥२१॥
पत्ती सुन यह बोल
कहा निज दया उमाये[3] ।
लेट जाव तुम सीध
चोंच में लेउँ उठाये ॥२२॥
ज्यों ही चोंच मंझार[4]
लिया तिस कीट दबाई ।
करन लगा हाकार[5]
मेरा दम निकला भाई ॥२३॥
हे सज्जन सिरताज
करो कुछ और उपाये ।

१ मार्ग, रास्ता । २ हालत । ३ उमँगा कर । ४ बीच । ५ हाहाकार ।

जामें रहे न धोख
सहज में जो बन आये ॥२४॥
तब पच्छी यों कहा
जतन अब रहता एके[1] ।
कस[2] तुम पकड़ो मोहिं
और मैं तुमको हलके ॥२५॥
जब तुम गिरने लगो
गहूँ मैं कस के तुमको ।
इसमें दुख जो होय
सहो तुम चुप से उसको ॥२६॥
घड़ी पलक की बात
फ़िकर[3] मन में नहिं राखो ।
सहज होय निर्बाह[4]
सहज में फल रस चाखो ॥२७॥

१ एकही। २ मज़बूती से। ३ चिन्ता। ४ गुज़र।

सेवक करो बिचार
बात जो हमने भाषी[1] ।
जिव है कीट समान
और सतगुरु हैं पच्छी[2] ॥२८॥
फल समझो निज धाम
करम को पेड़ पसारा[3] ।
चढ़ना तिन[4] भुगतान
कठिन चित लेव सँभारा[5] ॥२९॥
बिन पाये निज धाम
चैन भी जीव न पावे ।
परलय[6] की तकि[7] वाट
जीव से रहा न जावे ॥३०॥
बिन गुरु आये हाथ
काज कुछ जीव न सरिहै[8] ।

---

१ कही। २ पच्छी के समान। ३ फैलाव। ४ कर्मों का। ५ विचार। ६ प्रलय, संहार का समय। ७ देख। ८ बनेगा।

निर्बल कीट समान[1]

चढ़े और गिर गिर पड़िहै ॥३१॥

जो बड़ भागी जीव

मिले सतगुरु से आई ।

चरन कमल सिर धार

रहे तिन[2] माहिं समाई ॥३२॥

तिनकी[3] सुरत लपेट

शब्द में इक दिन धुर घर ।

सहजहि दें पहुँचाय

मेहर से प्यारे सतगुर ॥३३॥

चिन्ता अब सब छोड़

करो सतगुरु से प्रीती ।

राधास्वामी कही बनाय

सहज यह सब से रीती ॥३४॥

---

१ तरह। २ चरनन। ३ उनकी।

प्रश्न

मेहर भरे सुन बोल
घटा[1] घट सेवक छाई ।
रिमझिम[2] बरषा लाय
धार जल नैन बहाई ॥ १ ॥
घुमँड घुमँड[3] घनघोर[4]
प्रेम के बरसे बदला[5] ।
रोम रोम हरषाय
हिये के खिल गये कमला ॥ २ ॥
आस बास जग धुली
हुआ हिरदा अति निर्मल ।
गन्ध सुगन्धी[6] पाय
भँवर मन बैठा निश्चल ॥ ३ ॥

---

१ प्रेम के बादल । २ लगातार । ३ घिरकर । ४ धूमधाम से । ५ मेघ, बादल । ६ ख़ुशबू ।

सेवक होय अस हाल
प्रश्न की सुद्धि बिसारी[1] ।
स्वामी सरन अडोल
हिये बिच दृढ़कर धारी ॥ ४ ॥
स्वामी परम दयाल
मेहर अब कीन्ह नवीना[2] ।
धर सेवक सिर हाथ
[3]बचन मुख ऐसा कीना ॥ ५ ॥
सेवक भाग तुम्हार
जगा अचरज इस छिन में ।
लेव माँग सोइ माँग
आय जो तुम्हरे मन में ॥ ६ ॥
सेवक गदगद[4] होय
अरज़ अस कीन्ह सँभारा ।

---

१ भुला दी। २ नई। ३ मुख से इस तरह बचन कहा। ४ आनन्द में मग्न।

हे स्वामी सिरताज[1]
मेहर के निज भंडारा ॥ ७ ॥
ऐसी कोइ पहिचान
सन्त की कहो विचारी[2] ।
समझ बूझ जिस लाय
जीव लें सब चित धारी ॥ ८ ॥
कर तुम्हरी पहिचान
सभी जिव बैठें[3] जुड़ मिल ।
होंय चरनन लवलीन
मिटे सब[4] दाँता किलकिल ॥ ९ ॥
प्रेम प्रीति घट आय
भरम दल होवें नासा ।
सहज बने जिव काज
चरन में मिले निवासा ॥१०॥

१ शिर के भूषण यानी सर्वोत्तम। २ बिचार कर। ३ इकट्ठे होकर। ४ बाद विवाद, झगड़ा बखेड़ा।

सब मिल गुन तुम गाएँ
जगत में होय उजियारा[1] ।
माँग यही इक मोर
परम गुरु दीनदयारा ॥११॥

उत्तर

सुन सेवक की माँग
हुए स्वामी अति मगना[2] ।
गहरी मेहर बिचार
मृदू[3] अस बोले बचना ॥ १ ॥
माँग है तुम्हरी ठीक
परख पर सन्त की झीनी ।
मेहर करें जब धनी[4]
तभी कोइ ले उन चीन्ही[5] ॥ २ ॥

---

१ प्रकाश । २ प्रसन्न । ३ कोमल । ४ राधास्वामी दयाल । ५ चीन्ह ।

जा हिरदय अनुराग
सोई जिव जानो मेहरी[1] ।
सन्त परख सोइ पाय
सहज मन बुद्धी हेरी[2] ॥ ३ ॥
कान पड़े जब भिनक[3]
सन्त जन कहीं विराजे ।
हिरदय उमँगे चाव[4]
दरस की लगे पियासे ॥ ४ ॥
होवे सन्त असन्त
नहीं कुछ पता ठिकाना ।
ले सरधा[5] और आस
दरस को होय रवाना ॥ ५ ॥
सन्त होय कोइ एक
और पाखंडी बहुतक ।

१ दयापात्र । २ देखकर । ३ आवाज । ४ लालसा । ५ श्रद्धा ।

कर वाहर शृंगार[1]
करें निसदिन वहु कौतुक[2] ॥ ६ ॥
इक सम आसन लाय[3]
कहीं थे जिव वहु वैठे ।
ऊपर चादर डाल
सीस मुख सभी लपेटे ॥ ७ ॥
बालक इक अनजान
पिता अपने को खोजत ।
जा पहुँचा वाहि थान[4]
खवर पा भरमत डोलत[5] ॥ ८ ॥
चादर लिपटे देख
सभी बालक घबराया ।
सोच समझ चित लाय
सवन का मुख खुलवाया ॥ ९ ॥

---

१ सजधज, बनाव । २ तमाशा । ३ लगाकर । ४ स्थान, जगह । ५ भटकता हुआ ।

पहिले देखा नाहिं
पिता मुख भर के दृष्टी ।
देख सबन सम हाल
परख कस लावे पितु की ॥१०॥
मन में तब यही फुरी[1]
धरो टुक[2] धीर दिलासा[3] ।
पितु मेरे होंय एक
और सब भाँड तमासा ॥११॥
पितु के चित में प्यार
रहे मम ओर समाना ।
पाखंडी चित घात
द्रोह भय करें ठिकाना[4] ॥१२॥
पितु मेरे का प्यार
छिपे नहिं कभी छिपाया ।

१ फुरना हुई, विचार आया । २ थोड़ा । ३ धीरज, सन्तोष । ४ बास ।

दूसर से अस प्यार
बने नहिं कभी बनाया ॥१३॥
इक इक के ढिंग जाय
कहा तब बाल पुकारी ।
मैं हूँ बाल अनाथ
पिता बिन भया दुखारी ॥१४॥
अपने पितु[1] के खोज
तजा मैं घर और द्वारा[2] ।
करिहौं खोज और जाँच[3]
समझ अपनी अनुसारा[4] ॥१५॥
सुन सुन बालक बोल
हुए अँग सबके परगट[5] ।
सहज बाल पितु पाय
चरन में लागा झटपट ॥१६॥

१ पिता । २ द्वार । ३ परीक्षा । ४ मुताबिक़ । ५ प्रकट, ज़ाहिर ।

अनुरागी अस जाय
रहे कुछ दिन उन सँग में ।
दम दम ले पहिचान
बरति हैं[1] किन किन अँग में ॥१७॥

सतगुरु सन्त दयाल
जीव के सद हितकारी ।
जग में प्रगटें आय
जीव का करन उबारी ॥१८॥

सब से करें पियार
बाल सम सब को जानें ।
भूल चूक करे बाल
कभी नहिं चित में आनें ॥१९॥

उनका कोमल अंग
छिपे नहिं कभी छिपाया ।

[1] वर्ताव करते हैं।

दूसर से यह अंग
निभे[1] नहिं कभी निभाया ॥२०॥
राधास्वामी कहें सुनाय
परख यह सोई कर पावे ।
सन्त चरन अनुराग[2]
हृदय जिस माहिं समावे ॥२१॥

प्रश्न

सेवक सुन पहिचान
मगन होय बोला ऐसे ।
सर्व गुनन भण्डार
कहे कोइ गुन तुम कैसे ॥ १ ॥
सतगुरु की पहिचान
कही जो तुमने न्यारी[3] ।

---

१ निबहना, पूरा पड़ना । २ प्रेम । ३ अनोखी ।

सहज बसी हिय मोर
लगी मोहिं [1]अति कर प्यारी ॥ २ ॥
अद्भुत सुन्दर सीख[2]
जनाई दो इक तुक[3] में ।
अगम अथाह कहो सिन्ध
भरा तुम एकहि चुक[4] में ॥ ३ ॥
जो शिक्षा यह धार
रहे मन अपने प्रानी ।
निश्चय सन्त असन्त
सहज में ले पहिचानी ॥ ४ ॥
सन्त चरन अनुराग
हिये जिव होना चहिये ।
मेहर बिना पर धनी[5]
नहीं यह धन कोई पइये ॥ ५ ॥

१ अत्यन्त । २ शिक्षा । ३ लफ़्ज़ । ४ अँजुली । ५ धनी की ।

प्रथमे ठहरी मेहर
और अनुरागा दूजे ।
तीजे खोज और जाँच
समागम सतगुरु पीछे ॥ ६ ॥
एक विनय[1] अब करूँ
और मैं तुमसे दाता ।
सन्त मिले क्या करे
जीव सो कहो विख्याता[2] ॥७॥
जागा हिये अनुराग
मेहर जो हो गइ धुर की ।
जाँच परख बन आय
सरन भी मिल गइ गुरु की ॥ ८ ॥
अब जिव क्या कुछ करे
टिके सुरती[3] निज चरनन ।

१ विनती । २ खोलकर । ३ सुरत, तवज्जुह ।

और न कितहूँ[1] जाय
करो अब सो भी बरनन ॥ ६ ॥
तुम थी कही जनाय
सहज तरने की रीती ।
सोच फ़िकर सब छोड़
करो सतगुरु से प्रीती ॥१०॥
सोच फ़िकर सब छुटें[2]
करे जिव कौन उपावो[3] ।
गहिरी गुरु से प्रीति
जुड़े कस सो कह गावो ॥११॥

उत्तर

सुनकर बिनय नवीन[4]
मेहर स्वामी को आई ।
जीवन के [5]हित अर्थ
बचन यों बोल सुनाई ॥ १ ॥

---

१ कहीं भी । २ छूट जावें । ३ उपाय, यत्न । ४ नई । ५ भलाई के लिये ।

सेवक यह भी प्रश्न
नहीं है तुम्हरा कठिना[१] ।
सहज समझ में आय[२]
करे जिव क्या कुछ जतना[३] ॥ २ ॥
रोगी कोइ जो होय
दुखी अतिकर[४] रोगन से ।
ढूँढ़ भाल ले पाय
जड़ी अस कहिं भागन से ॥ ३ ॥
[५]जाके पीये घोट
और घिस घिस के लाये[६] ।
कटत कटे सब रोग
देह निर्मल[७] हो जाये ॥ ४ ॥
रोगी क्या कुछ करे
बने जो ऐसी सूरत[८] ।

१ मुश्किल । २ आता है । ३ यत्न । ४ अत्यन्त । ५ जिसके घोट कर पीने से । ६ लगाने से । ७ रोगहीन । ८ हालत ।

सोचो मन में आप[1]
कहन की नाहिं ज़रूरत ॥ ५ ॥
[2]हाथ लगे पर जड़ी
उमँग अस वाढ़े मन में ।
आधा दुख मिट जाय
हर्ष वस से [3]तत्छिन में ॥ ६ ॥
घिस घिस के नह लाय[4]
प्रीति से निसदिन बूटी[5] ।
आस भरोसा धार
पिये वाहि दिन दिन कूटी[6] ॥ ७ ॥
कुछ दिन लाये[7] खाय
असर जो बूटी लावे ।
तन का रोग असाध[8]
सहज में कटता जावे ॥ ८ ॥

१ स्वयम्, खुद । २ जड़ी हाथ लगने पर । ३ उसी घड़ी । ४ लगावे । ५ जड़ी । ६ कूटकर । ७ लगाने से । ८ कठिन ।

फिर तो यही जी आय
[1]लेस ले सारे तन को ।
पेश कहीं जो जाय
[2]भच्छ ले [3]कई इक मन को ॥ ९ ॥
भूले तन की पीड़
और रोना भी भूले ।
वार वार सिल बाट
धरे बूटी और झूले[4] ॥१०॥
जब लग बिनसे रोग
होय नहिं काया निर्मल ।
चैन[5] न उसको आय
तजे नहिं बूटी छिन पल ॥११॥
जग के भीतर बास
लगा जिसको दुखदाई ।

१ चुपड़ ले । २ खाले । ३ ज्यादा मिक़दार में । ४ झूमता है, मस्त होता है । ५ स्थिरता, आराम ।

भोग रोग सम जान
पड़े जिसको सब आई ॥१२॥
रहे दुखी अत्यन्त
तपत बेबस रहे तन में ।
पेश कछू नहिं जाय
सहे दुख मन ही मन में ॥१३॥
बूझत बूझत बूझ
पड़े महिमा सन्तन की ।
जाग उठे बड़ भाग
लाग हो चित चरनन की ॥१४॥
ऐसा जा का हाल
सोई अनुरागी कहियन[1] ।
मेहर करें जब धनी[2]
तभी चित [3]लाग समैयन ॥१५॥

१ कहा जाता है। २ मालिक। ३ लगन समाती है।

अनुरागी अस जीव
महा रोगी सम जानो ।
और सतगुरु संजोग
जड़ी का मिलना मानो ॥१६॥

हाथ लगे पर जड़ी
खिला मन जस रोगी का ।
आन[1] मिले गुरुदेव
घटे दुख अस खोजी का ॥१७॥

जस रोगी ले आस
करे बूटी का सेवन[2] ।
खोजी धर विश्वास
रहे कुछ दिन गुरु चरनन ॥१८॥

सेवा निस दिन करे
प्रीति से घिस[3] तन मन को ।

१ आकर। २ इस्तेमाल। ३ रगड़ कर।

सँग में बैठे जाग
[1]खोल के नैन श्रवन को ॥१६॥
बचन सुने चित देय
पिये जस रोगी बूटी ।
ले जुक्ती अभ्यास
करे [2]दे मन को कूटी ॥२०॥
गुरु सँग के परताप[3]
तपन जब मिटती देखे ।
सहज होत जिव काज
आस जग घटती पेखे ॥२१॥
फिर तो यही मन चाय
[4]वार दे सरबस रचना ।
पेश कहीं जो जाय
बना ले गुरु को अपना ॥२२॥

१ आँख कान खोलकर, सावधान। २ मन को कूट दे यानी पीस दे। ३ प्रताप से। ४ सब संसार को निछावर कर दे।

भूले जग के दुक्ख
और तपना भी भूले ।
[1]नैनन गुरु बिठलाय
मगन होय निस दिन भूले ॥२३॥
जब लग होय छुटकार
मिले नहिं चरनन वासा ।
चैन न उसको आय
तजे नहिं [2]स्वाँस गिरासा ॥२४॥
इससे बढ़ क्या प्रीति
करेगा जिव या जग में ।
जाय बसी चित माहिं
धसी मन की रग रग में ॥२५॥
राधास्वामी कहा सुनाय
यही है वढ़ के उपावो ।

१ गुरु के स्वरूप का ध्यान करके । २ स्वास ग्रास यानी छिनभर भी ।

गुरु सँग करके वास
प्रीति मन माहिं बढ़ावो ॥२६॥

शब्द (६)

धन धन धन प्रीतम बलिहारी[1]
प्रेम लहर लहरावत न्यारी[2] ॥ टेक ॥
बरसत अम्मृत धार अखंडा[3]
भींज रही रचना सब सारी ॥ १ ॥
धूम मची अब धरन गगन में
होवत पल छिन जग उद्धारी ॥ २ ॥
भक्ती राज[4] हुआ अब घट घट
माया काल निपट[5] थक हारी ॥ ३ ॥
सुरत नवेली[6] सज धज आई
प्रीतम चरनन गई लिपटारी ॥ ४ ॥

---

१ क़ुर्बान जाती हूँ। २ अनोखी। ३ अटूट। ४ राज्य, असल। ५ बिलकुल। ६ नवीन।

पुरुष अपार अनन्त हमारे
मेहर दया से लिया अपना री ॥ ५ ॥
(मेहर से सबको (हमको) लिया अपना री)
चहुँ दिशि प्रेम घटा रहि छाई
मस्त मगन सब जीव सुखारी[1] ॥ ६ ॥
मन इन्द्री भी निर्मल होकर
चरनन रस ले जगत बिसारी ॥ ७ ॥
तन मन अँग अँग उमँगत घूमत
उठत अकह शब्दन झनकारी ॥ ८ ॥
सुरत चली तज पिंड असारा
पँचरंगी फुलवार लखा री ॥ ९ ॥
[2]सहस गगन दसद्वारा खोलत
महासुन्न के पार सिधारी ॥१०॥

---

१ सुखी। २ सहसदल कमल, त्रिकुटी, सुन्न।

भँवरगुफा होय सतपुर गाजी[1]
सतगुरु दर्शन अद्भुत पा[2] री ॥११॥
अलख अगम और अनाम धाम चढ़
मिल गये दर्शन राधास्वामी भारी ॥१२॥

बिनती (१०)

दीन दुखी होय आज,
हे सतगुरु हम दास मिल ।
सीस चरन पर राख[3],
बार बार बिनती करें ॥ १ ॥
उट्ठैं लहर अपार,
भवजल[4] गहिर गँभीर मध[5] ।
ज़हर क़हर[6] की धार,
इस रचना सिर पर गिरै ॥ २ ॥

---

१ गरजी, प्रसन्न हुई । २ पाकर । ३ रखकर । ४ संसार-रूपी समुद्र । ५ में । ६ तेज ।

गहिरी दया विचार,

हे समरथ पूरन धनी ।

देवो कष्ट निवार[1],

काल कर्म की धार के ॥ ३ ॥

तुम्हरी सरन अडोल,

हम दासन ने दृढ़ गही ।

तुम्हरी मेहर अतोल,

कस मुख से वरनन करें ॥ ४ ॥

चरन कमल की छायँ[2],

हे दाता तुम निज दई ।

क्या गुन तुम्हरे गायँ,

आप मिले तुम आनकर[3] ॥ ५ ॥

ऐसी मेहर कराय,

हम चित अब [4]डोले नहीं ।

१ हटा । २ छाया । ३ आकर । ४ विचले नहीं ।

भवजल पार लँघाय,
तुम चरनन में बास हो ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल,
परम पुरुष पूरन धनी ।
निसदिन करो सँभाल,
जब लग बेड़ा[1] पार हो ॥ ७ ॥
मान लेव मेरे साइयाँ,
एती[2] अरज़ हमार ।
नेकहु[3] बिलँब न कीजिये,
चरन सरन बलिहार ॥ ८ ॥

---

१ नाव । २ इतनी । ३ ज़रा भी ।

प्रार्थना (११)

हे दयाल सद कृपाल,

हम जीवन आधारे ।

सप्रेमप्रीति और भक्ति रीति,

बन्दें चरन तुम्हारे ॥ १ ॥

दीन अजान इक चहें दान,

दीजे दया बिचारे ।

कृपादृष्टि निज मेहरवृष्टि,

सब पर करो पियारे ॥ २ ॥

पुस्तकों का सूचीपत्र

नीचे लिखी हुई पुस्तकें स्टोरकीपर, राधास्वामी सेन्ट्रल सत्संग, दयालबाग़ (आगरा), से मिल सकती हैं।

—हिन्दी-छन्दबन्द—

१	राधास्वामी बानी-संग्रह—भाग पहला ...	१॥)
२	राधास्वामी बानी-संग्रह—भाग दूसरा ...	२)
३	प्रेमबिलास—भाग १–४	१॥)
४	मुक्तावली	।)

—हिन्दी-वार्तिक—

५	राधास्वामी मत-दर्शन	॥)
६	जिज्ञासा	॥)
७	अमृत-बचन	२॥)
८	जतन-प्रकाश	॥)
९	सत्संग के उपदेश—भाग पहला ...	१॥)
१०	सत्संग के उपदेश—भाग दूसरा ...	१॥)
११	सत्संग के उपदेश—भाग तीसरा ...	१)
१२	भगवद्गीता के उपदेश	१)
१३	प्रेम-समाचार	॥)
१४	रोज़ाना वाक़आत (डायरी १८ सि० लग़ायत ३१ दि० १९३०) ...	॥≈)
१५	शरणाश्रम का सपूत (नाटक) ...	।≈)
१६	स्वराज्य (नाटक सचित्र)	॥।)
१७	संसार-चक्र (नाटक) मामूली काग़ज़ पर ...	।)
१८	" " बढ़िया काग़ज़ पर ...	।≈)
१९	दीन व दुनिया (नाटक)	।)

—उर्दू-नसर—

२० राधास्वामी मत-दर्शन	...	...	॥)
२१ जिज्ञासा	...	...	॥)
२२ अमृत-बचन	...	...	२)
२३ भगवद्गीता के उपदेश	...	...	१)
२४ रोज़ाना वाक़ात (डायरी १८ सि० लग़ायत ३१ दि० १९३०)		...	॥=)
२५ शरणाश्रम का सपूत (नाटक)		...	।)
२६ स्वराज्य (नाटक बातस्वीर)	...	...	।॥)
२७ संसार-चक्र (नाटक) मामूली काग़ज़ पर		...	।)
२८ " " बढ़िया काग़ज़ पर		...	।=)
२९ दीन व दुनिया (नाटक)	...	...	।)

—गुरुमुखी-छन्दबन्द—

३० प्रेमबिलास—भाग १-४	...	...	१॥)

—बँगला-वार्तिक—

३१ राधास्वामी मत-दर्शन	...	...	॥)
३२ जिज्ञासा	...	...	॥)

—तिलेगू-वार्तिक—

३३ राधास्वामी मत-दर्शन	...	...	॥)
३४ जिज्ञासा	...	...	॥)
३५ मुक्तावली	...	...	॥)

—तामिल-वार्तिक—

३६ राधास्वामी मत-दर्शन	...	...	॥)
३७ जिज्ञासा	...	...	॥)

—अँगरेज़ी—

३८ टेबल् टॉक	...	...	१)
३९ दयालबाग़ (सचित्र)	...	...	।॥)